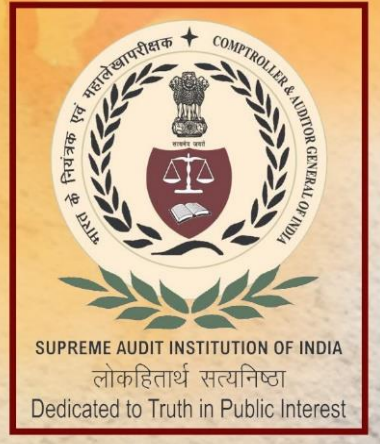




सुगंध

ग्यारहवाँ संस्करण



प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय(चेन्नै)
का कार्यालय



कार्यालय प्रधानों द्वारा 'सुगंध' पत्रिका के दशम् अंक का विमोचन



2021-22 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रशासन अनुभाग को शील्ड प्रदान किया गया

मुखपृष्ठ में

चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट-लैंडिंग करने वाला पहला मिशन बनकर चंद्रयान-3 ने इतिहास रच दिया है, दक्षिणी ध्रुव एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी पहले कभी खोज नहीं की गई थी। यह सम्पूर्ण भारत के लिए गर्व का विषय है। "इसरो" के कौशल और निपुणता की यह "ऐतिहासिक उपलब्धि" हमारे दिलों में हमेशा एक गर्व का क्षण बनी रहेगी।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्नै के कार्यालय के समस्त पदधारियों की तरफ से इसरो को हार्दिक शुभकामनाएं।

**हार्दिक
शुभकामनाएं**



लेखापरीक्षा भवन

सुगंध
प्रधान लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्नै का कार्यालय
वार्षिक गृह पत्रिका

सुगंध परिवार

संरक्षक

श्रीमती पी. माधवी

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

मार्गदर्शक

श्री एस. गणेशन, निदेशक (प्रशासन, सीआरए एवं सीई)

श्री कि.वेणुगोपाल, उप निदेशक (डी टी)- 1, जीएसटीए

परामर्शदाता

श्री एन. श्रीधर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

संपादक मंडल

डॉ. एस. सुधावल्ली, हिन्दी अधिकारी

श्रीमती अन्नपूर्णा वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री विजयेता साव गुप्ता, कनिष्ठ अनुवादक

श्री राहुल साव, कनिष्ठ अनुवादक

संदेश



यह अत्यंत गर्व एवं हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय द्वारा 'सुगंध' पत्रिका के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के उत्तरोत्तर विकास एवं राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति दृढ़ निश्चय एवं रूचि को दर्शाती है।

'भाषा' किसी भी राष्ट्र की संस्कृति एवं परम्परा की परिचायक होती है। भारत एक बहु-भाषी देश है, इसके बावजूद भी इसकी संस्कृति, सभ्यता एवं आत्मा में 'हिंदी' रची-बसी है। कारण है इसका सहज, सरल, सुबोध तथा प्रवाहमय स्वरूप। हमारे कार्यालय में 'सुगंध' पत्रिका ने इस दिशा में हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पत्रिका में कार्यालय के कार्मिकों द्वारा विभिन्न विषयों से सम्बंधित रोचक व ज्ञानवर्धक रचनाएँ समाहित हैं। अतः हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देकर यह कार्यालय राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी सहयोग कर रहा है।

मुझे आशा है कि 'सुगंध' के इस अंक के माध्यम से पाठकों को हिंदी के विविध रूपों की जानकारी मिलेगी। पत्रिका से जुड़े सम्पादन मंडल एवं सभी रचनाकारों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

माधवी

संदेश



**एस. गणेशन, निदेशक
(प्रशासन, सीआरए एवं सी ई)**

यह अत्यंत हर्ष का विषय है हमारे कार्यालय (प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय) द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए ई-पत्रिका "सुगंध" के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका प्रकाशन अधिकारियों तथा कर्मचारियों की राजभाषा में रुचि तथा रचनात्मक कौशल को प्रदर्शित करता है।

राजभाषा हिंदी के विकास हेतु कार्यालय द्वारा किए जा रहे कार्य सराहनीय है। पत्रिकाओं के निरंतर प्रकाशन से राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु एक उचित माहौल विकसित होता है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ साथ राजभाषा संबंधी अन्य गतिविधियों का आयोजन एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

गणेशन

संदेश



कि. वेणु गोपाल, उप निदेशक
(डी टी-1 एवं जीएसटीए)

हम सब के लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है कि "सुगंध" के ग्यारहवें अंक का ई-प्रकाशन हमारे कार्यालय द्वारा किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में "सुगंध" पत्रिका निरंतर महत्वपूर्ण योगदान करती रही है, एवं आगे भी करती रहेगी। हिंदी हमारी राजभाषा है, अतः इसके प्रति समर्पित रहना हमारा संवैधानिक दायित्व भी है।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं सफल प्रकाशन के लिए सभी योगदानकर्ताओं एवं सम्पादक मण्डल को शुभकामनाएँ।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Administration
कि. वेणुगोपाल

संदेश



एन. श्रीधर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रशासन)

वर्ष 2023 के लिए हमारी हिंदी पत्रिका 'सुगंध' का परिचय देते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है।

यह पत्रिका एक ऐसा मंच है जो विभाग के सभी अधिकारियों को लेखन, चित्रकारी में अपने रचनात्मक कौशल को बढ़ाने और अपनी कल्पना को हिंदी में लिखने का अवसर देती है।

मैं पत्रिका के विमोचन में उनके बहुमूल्य योगदान और पूरे दिल से समर्थन के लिए सभी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। समर्थन और मार्गदर्शन के लिए प्रधान निदेशक महोदया को मेरा साधुवाद।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

एन. श्रीधर

डॉ. एस. सुधावल्ली
हिन्दी अधिकारी



"हिन्दी दिवस" की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ "सुगंध" के ग्यारहवें अंक को प्रेषित करते हुए हमें अत्यधिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

भाषा में एकता स्थापित करने की अद्भुत क्षमता होती है। भारत में अनेक भाषाओं के प्रचलन के होते हुए भी, हिन्दी भाषा का एक अलग महत्व है। हिन्दी भाषा सीधी, सरल, सीखने-सिखाने में आसान और साहित्य की दृष्टि से भी समृद्ध है। एक राष्ट्र के स्वरूप एवं गरिमा को प्रतिपादित करने वाली चेतना के रूप में यह भाषा है। समूचे राष्ट्र की भावधारा को व्यक्त करने वाली भाषा के रूप में हिन्दी भाषा की पहचान की गई है।

इस प्रकार की गृह-पत्रिकाएँ कार्यालय में सकारात्मक माहौल पैदा करती हैं एवं कार्यालय में कार्यरत पदधारियों की साहित्यिक प्रतिभा को सामने लाने में भी सहायक हैं।

भारत एक बहु-भाषी राष्ट्र है, जहाँ समृद्ध संस्कृति की विशाल परम्परा है, जिसका आभास इस पत्रिका में समाविष्ट विभिन्न विधाओं से होता है। गैर हिन्दी राज्यों में हिन्दी को बढ़ावा देने के विशेष प्रयास से प्रति वर्ष यह पत्रिका निकाली जाती है।

आशा है कि पिछले संस्करणों की तरह, इस बार भी "सुगंध" पत्रिका ज्ञान, प्रेरणा, नैतिक, बोध, सृजनात्मकता एवं स्वस्थ साहित्य से ओत-प्रोत रहेगी।

अनुक्रमणिका

ए. राजू



1. एक आवारा की सोच
2. ट्यूबलाइट



आर.गुरुप्रसाद

मन की बात कार्यक्रम के 100वें कड़ी

राजीव प्रसाद



मत उदास हो राजीव जिदंगी तो एक सफर है



बी.ऐश्वर्या

पेड़ की शक्ति

एम जानकी दिवाकरन



नन्ही परी



प्रवीण कुमार मीना

बाल श्रम – शिकंजे में बचपन

संजोय घोष



पिचावरम भ्रमण



बी. भुवनेश्वरी

जो हुआ, अच्छा हुआ

सव्यसाची भगत



नशा और नशे की लत से छुटकारा



अन्नपूर्णा वर्मा

पहुँच

आँचल



जिंदगी है बस सीखने से



जे. पुष्कला

नारी शक्ति

ज्ञानश्री दिब्येन्दु बेहेरा



कोल्ली हिल्स का सफर



डॉ एस. सुधावल्ली

तमिलनाडु की सांस्कृतिक विशेषता
- तेरुक्कूत्तु

विजयेता साव गुप्ता



मोबाईल एवं इंटरनेट हमारे मित्र या शत्रु ?



राहुल साव

हृदय का संविधान

विजयेता साव गुप्ता

एवं

राहुल साव

को के.अनु.ब्यूरो से प्राप्त पुरस्कार की झलक

हिन्दी अनुभाग की गतिविधियां

कल्याण कक्ष की गतिविधियां



ट्यूबलाइट

केवल दस अंक हैं, जैसे 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 और 9। इन अंकों का अंकित मूल्य निश्चित होता है, लेकिन इन अंकों से बनने वाली संख्याओं का मान इनके स्थानीय मान पर निर्भर करता है। उनमें से प्रत्येक की स्थिति के संदर्भ में, जैसे इकाई, दहाई, सैंकड़ा इत्यादि।

इसी तरह, हर इंसान एक अंकित मूल्य के साथ पैदा होता है और यह जीवन भर स्थिर रहता है। लेकिन जिस तरह से समाज उसे महत्व देता है, वह उसके अंकित मूल्य पर नहीं है, बल्कि अंकित मूल्य का प्रभाव इस संदर्भ में है कि वह समाज में खुद को कैसे रखता है, अर्थात् जगह का मूल्य।

एक अंक जिसका एक विशेष मान निर्दिष्ट किया गया है उसका अंकित मूल्य नहीं बदल सकता है, लेकिन एक समग्र संख्या में दसवें, सौवें आदि की स्थिति के आधार पर खुद का एक उच्च मूल्य प्राप्त कर सकता है। इसी प्रकार, एक विशिष्ट कौशल/ प्रतिभा के साथ संपन्न एक विशेष व्यक्ति, जिसे उचित पहचान नहीं मिल सकती है, समाज में खुद को उस स्थिति में रख सकता है जहाँ उस विशिष्ट कौशल/ प्रतिभा को बेहतर पहचान मिलती है।

इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि कई व्यक्ति जो अकादमिक उत्कृष्टता का दावा करते हैं, वे जीवन में हमेशा सफल नहीं होते हैं, जबकि औसत दर्जे या खराब शैक्षणिक उपलब्धियों वाले लोग सफलता की सीढ़ी पर अधिक ऊँचाई तक पहुँचते हैं। पूर्व के मामले में, यह खराब स्थानीय मान के साथ उच्च अंकित मूल्य है और बाद वाले में, यह उच्च स्थानीय मान में स्थित छोटा अंकित मूल्य है।

तो चिंता न करें अगर आप 'ट्यूबलाइट' पैदा हुए हैं; बस अपने आप को एक इलेक्ट्रॉनिक चोक के साथ जोड़ लें और पूरी दुनिया आपकी चमक देखेगी !!!



एक आवारा की सोच

देश के कुछ हिस्सों में भारी बारिश के बाद, आज मीडिया में प्रमुख चर्चा यह है कि जलाशयों के भर जाने के कारण बहुत सारा पानी नदियों में छोड़ दिया गया है और इससे भारी मात्रा में पानी बर्बाद हो रहा है। विभिन्न मीडिया खराब जल प्रबंधन प्रणालियों/ प्रक्रियाओं और अगले मानसून तक प्रभावी उपयोग के लिए अतिरिक्त पानी को संग्रहित करने की तैयारी की कमी के बारे में लिखते या बोलते या चर्चा करते हैं।

लेकिन, क्या प्रकृति माँ यही चाहती है!!!

क्या प्रकृति माँ का कर्तव्य नहीं है कि वह प्रत्येक प्रजाति के लिए पानी प्रदान करके पूरे ग्रह की देखभाल करे - उसके बच्चे कौन हैं !!!

यह प्रकृति की रचना है कि महासागरों से वाष्पित होने वाला पानी बारिश के रूप में वापस आता है और महासागरों को फिर से भर देता है ताकि समुद्री पारिस्थितिकी की देखभाल करने के लिए महासागरों में लवणों का घनत्व बनाए रखा जा सके और साथ ही पानी प्रदान किया जा सके। जीवन, भूमि पर उन प्रजातियों के लिए अगर बारिश के पानी को वापस समुद्र में नहीं जाने दिया जाता है, तो यह प्रकृति के डिजाइन के खिलाफ नहीं है? आज, किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र के साथ जो कुछ भी होता है, उसके लिए मनुष्य को ही दोषी ठहराया जाता है। हाँ, काश यह सच हो। लेकिन, प्राचीन युग के डायनासोर और अन्य जीवन रूप कहाँ हैं ? वे कभी भी मनुष्यों के साथ नहीं रहते थे, लेकिन ग्रह पर मनुष्य के कदम रखने से पहले ही विलुप्त हो गए थे !!! वे मानवीय हस्तक्षेप के कारण विलुप्त नहीं हुए थे, लेकिन माँ प्रकृति कुछ समायोजन करती है जिसके माध्यम से वह कुछ त्याग करती है, बाकियों को बचाने के लिए !!!

संभवतः, माँ प्रकृति चाहती है कि महासागरीय जीवमंडल अपने घनत्व को बनाए रखे और यह सुनिश्चित करे कि मनुष्य जो चाहता है उससे अधिक बारिश करे जो उसके जलाशयों में कब्जा कर सकता है, बाकी सब महासागरों के लिए नियत है और वह सुनिश्चित करती है कि वे महासागरों तक पहुँचे। वैज्ञानिक जगत यह तर्क दे सकता है कि जलाशयों की भंडारण क्षमता बढ़ाई जा सकती है। हां, यह किया जा सकता है, लेकिन अधिकतम भंडारण फिर से मनुष्य के इंजीनियरिंग कौशल की सीमाओं से सीमित नहीं है, बल्कि मातृ प्रकृति द्वारा लगाए गए भूगर्भीय प्रतिबंध हैं। यह सच है कि हम महान जलप्रलय की ओर बढ़ रहे हैं, जो कि अपरिहार्य है, लेकिन अगर हम प्रकृति माँ के नाजुक संतुलन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, तो हमें बड़े जलप्रलय की ओर बढ़ने में देर नहीं लगेगी !!!



मन की बात

‘मन की बात’ कार्यक्रम के 100वें कड़ी के प्रसारण समारोह के अवसर पर तमिलनाडु के महामहिम राज्यपाल श्री आर. एन. रवि ने मुझे दि.30.04.2023 को राजभवन में आमंत्रित किया था और मैं उस समारोह में शामिल हुआ।

इस प्रसारण के अवसर पर तमिलनाडु के राज्यपाल श्री आर. एन. रवि ने कहा कि प्रधानमंत्री के संबोधन में सबसे ज्यादा जिक्र तमिलनाडु का हुआ है।

रेडियो कार्यक्रम के 100 वीं कड़ी के प्रसारण के अवसर पर यहाँ राजभवन में उन्होंने कहा कि राजभवन के लिए यह ऐतिहासिक क्षण है जब दूसरों को प्रेरणा देने वाले इतने सारे लोग एकत्र हुए हैं।

उन्होंने यह भी कहा, “राजभवन के लिए यह ऐतिहासिक क्षण है, इस दरबार हॉल में कई कार्यक्रम हुए हैं, कई अतिथियों को सम्मानित किया गया है, लेकिन आज का दिन खास है क्योंकि आप सभी हमारे साथ हैं और आप लोग इस देश को बदलने के लिए अपने-अपने तरीके से क्रांति ला रहे हैं।”

- राजनीति का जिक्र नहीं

श्री रवि ने कहा, “मन की बात के बारे में सबसे अनूठी चीज है कि इसमें कहीं भी राजनीति नहीं है। सामान्य तौर पर आज राजनीति इतनी प्रबल हो गई है कि जब भी हम किसी राजनेता के बारे में सोचते हैं तो वे हमेशा राजनीति की बातें करते हैं, लेकिन इन 100 कड़ियों में उन्होंने (प्रधानमंत्री जी) कभी भी राजनीति का जिक्र नहीं किया।”

- मोदी जी लोगों से जुड़े: राज्यपाल

उन्होंने कहा कि राजनीति पर ध्यान देने की जगह मोदी जी लोगों से जुड़े और ऐसे लोगों के बारे में बातें करना शुरू किया जो निस्वार्थ भाव से अपने-अपने क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

समारोह के दौरान, राज्यपाल ने मन की बात कार्यक्रम की सफलता में योगदान देने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार और स्मृति चिन्ह प्रदान किया।

‘मन की बात’ कार्यक्रम के 100वें कड़ी का प्रसारण समारोह



"ஆன்மிக பயணம்"

ஆளுநர் மாளிகையில் மனதின் குரல் நிகழ்ச்சியை கேட்க பிரத்யேக ஏற்பாடு



सराहनीय
कार्य के
लिए बधाई



राजीव प्रसाद,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



मत उदास हो राजीव जिदंगी तो एक सफर है

खुशियों का क्या है
वो फिर से लौट आएँगी ।
वो सब कुछ कर
जो न कर सका
अपनी पिछली कोशिशों में
मत उदास हो

बेशक कुछ परेशानियाँ हैं इस दौर में
पर कुछ भी तो नया नहीं तेरी नजर में
कुछ देर बैठ लो
डगर लंबी है
थको मत

चलते रहो सफर में
न निराशा, न थकान
हौसला भरपूर अंदर
उछालते रहो मुट्टी
लहराते रहो हवा में
ताने रहो तरकश के तीर
इस अंधेरे की भेद डाल, मुश्किलों के गुरुर बिखर जाएंगे
लौट आएँगी खुशियाँ
यकीन कर ।

बी. ऐश्वर्या,
(सुपुत्री: श्री सी वी बाबू,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)



पेड़ की शक्ति

धरती की सुंदरता का कारण पेड़ ही है,
पेड़ पौधे प्रकृति माँ का वरदान है
माँ प्रकृति सारी जिंदगी कहती है-

“ इस सुन्दर प्रकृति की रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है। ”

पेड़ अनेक प्रकार के हैं,
अलग आकार, रंग और अलग आकृति-घुमावदार,
लंबा, छोटा और सीधा- इनकी रक्षा के लिए
माँ प्रकृति सारी जिंदगी कहती है-
“ इस सुन्दर प्रकृति की रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है। ”

पेड़ के बिना ऑक्सीजन नहीं मिल सकती है
हमें पेड़ में रहनेवाले और चहचाहाने वाले पक्षियों के बारे में सोचना है,
अब अपने घर को अपने सामने तबाह करने की तरह कल्पना करें,
वैसे ही शिकायत होती है न पक्षियों को?
वनों की कटाई को बंद करें
पक्षी हो या जानवर, हम सबको भी तो जीने हैं।

पेड़ का प्रत्येक भाग महत्वपूर्ण है।
रुचिकर फल, फूल और सब्जी पेड़-पौधे से ही प्राप्त होते हैं-
बीज, मिट्टी, सूरज की रोशनी, पानी और हवा,
ये सब पेड़ों के बढ़ने के लिए आवश्यक है।
पेड़ तो हमारे जिंदगी का भाग है और
पेड़ प्रकृति माँ का एक बड़ा उपहार है।

पर हम हमेशा उस उपहार को कष्ट देते हैं।
अगर प्रकृति माँ इस उपहार को वापस लेती है तो
हमारे जिंदगी टूट जाएगी - इसलिए
इस अमूल्य वरदान को हमें रक्षा करना है।



नन्ही परी

हमारे घर आई एक नन्ही परी
एक गुड़िया जन्म ली हमारे घर
ढेर सारी खुशियाँ लाई हमारे घर
यह नन्ही परी ॥

हमारे जीवन में रौनक लाई
यह नन्ही परी
हमारे सूनी सी जिंदगी में एक नया प्रकाश एवं एक नई दिशा लेकर आई
यह नन्ही परी ॥

अब जीने का मक़सद और उम्मीद, उमंग हमारी जिन्दगी में
यह सब संभव हुआ हमारी इस नन्ही परी के आगमन से
हमारे घर भी आई एक नन्ही परी ॥

बच्चे भगवान का वरदान होते हैं
यह सुन्दर सी गुड़िया जिसकी मुस्कान इतनी हसीन, खूबसूरत और
अति मधुर है क्योंकि उसके दोनों गालों में डिंपल है
गोरे गोरे गाल, गुलाबी होंठ, हिरणी जैसी आँखें और घुंघराले केशों वाली
यह नन्ही परी
प्यारी पोती हमारी
हमारे घर भी आई एक नन्ही परी ॥

उसकी हर चेष्टा मनमुग्ध और मनमोहित कर देती है
वह एक चुंबक की तरह सब को अपनी तरफ आकर्षित करती है
उसके छोटे से पाँव और हाथ कितना भी चूमो दिल नहीं भरता
उसकी अस्पष्ट उच्चारण भी अतिमधुर है, अमृतवाणी है
हम भगवान के आभारी रहेंगे कि
हमारे घर जन्मी ऐसी एक नन्ही परी ॥

उसकी देखभाल करने में कोई दिक्कत या परेशानी नहीं बल्कि
खुशी है क्योंकि वह सही मायने में एक नन्ही परी है
जब वह सोती है उसके चेहरे पर एक मंद सी मुस्कान रहती है
हवा से भी निवेदन है कि वह धीरे चले, उसे न उठाये क्योंकि
एक छोटी सी आवाज़ से उसकी नींद खुल जाती है, वह जाग जाती है
यह नन्ही परी हमारी ॥

जब वह उठती है,
उसकी मुस्कान जैसे अँधेरे कमरे में हल्की सी सूरज के दिव्य रश्मि जैसी
शब्दों में वर्णन करना कम सा पड़ जाएगा
अपने हृदय में खुशी के फ़ौवारे फूटते हैं
हमारे घर आई एक नन्ही परी ॥

हमारे इस सुनसान-सी जिंदगी को उलट पुलट करनेवाली यह नन्ही परी
हमारी जीवनरेखा बन गयी
हमारे घर आई यह नन्ही परी ॥

हमारे भगवान से यही प्रार्थना है
कि हमारी इस नटखट-सी गुड़िया को
लम्बी आयु, अच्छा स्वास्थ्य, बढ़िया शिक्षण मिले और
अपने सहपाठियों और दोस्तों से हमेशा प्यार से रहे
हमेशा धन्य रहे और आबाद रहे
भगवान हमारी उम्र भी उसे दे और उसे सही सलामत रखे
बिना कोई आपत्ति जिंदगी गुज़ारे, फूले-फले,
यह नन्ही परी हमारी ॥

दिल उभर आता है उसके विचारों से
उसे देखने के लिए तरसता है यह दिल
आशा करना, उसकी राह ताकना
अभी अगले साल तक, उसके आने के इंतज़ार में जी लेंगे हम
यह नन्ही परी हमारी
हमारे घर भी आई एक नन्ही परी ॥

प्रवीण कुमार मीना
लेखापरीक्षक



बाल श्रम – शिकंजे में बचपन

कहा जाता है कि 'आज के बच्चे कल के भविष्य हैं,' किंतु यह भविष्य तब अंधकारमय दिखने लगता है, जब कहीं दूर कारखाने के शोर में या महानगरीय कचरे के ढेर में बाल हथेलियाँ अपने सपने और आँसू पोंछने के लिए विवश हो उठती हैं। समाज और सरकार दोनों ने बाल श्रम की समस्या को गम्भीरता से नहीं लिया, परिणामस्वरूप आज भी विश्व में लगभग 40 करोड़ बाल श्रमिक अपना बचपन बेचने के लिए मजबूर हो रहे हैं। किंतु वर्ष 2014 में घोषित शांति के नोबल पुरस्कार ने एक बार पुनः समाज व सरकार का ध्यान खींचा है तथा बालमन में एक सुनहरे भविष्य की आशाएँ भर दी हैं।

परिभाषा: “बाल श्रम का अर्थ उस कार्य से है जिसमें कार्य करने वाला व्यक्ति कानून द्वारा निर्धारित आयु सीमा से कम होता है। ” वह कार्य जो बच्चों को उनके बचपन, उनकी क्षमता व गरिमा से वंचित करता है, वह कार्य जो मानसिक, शारीरिक, सामाजिक व नैतिक रूप से बच्चों के लिए हानिकारक हो या वह कार्य जो शैक्षिक कार्य में बाधा उत्पन्न करता हो तथा किसी भी प्रकार से उनके स्वस्थ बचपन के अनुभव को प्राप्त करने में हस्तक्षेप करता हो।

वर्तमान स्थिति: सर्वाधिक बाल श्रमिक भारत में हैं। 50 लाख बाल श्रमिक ईंट भट्टे पर काम करते हैं। पूरे विश्व में 10 करोड़ बाल श्रमिक 6 से 14 वर्ष वाले असंगठित क्षेत्रों में काम करते हैं। भारत में सर्वाधिक बाल श्रम आंध्र प्रदेश में हैं।

बाल श्रम के कारण:

- जनाधिक्य व गरीबी की समस्या
- निरक्षरता व संरक्षकों की जागरूकता का अभाव
- परिवार का बड़ा आकार
- भू स्वामियों, उद्योगपतियों का निहित स्वार्थ
- सस्ता बाल श्रम
- अल्पआयु में विवाह का होना
- शिक्षा व्यवस्था की भयपूर्ण व प्रतिकूल परिस्थितियाँ

नियोजक क्षेत्र: ईंट-भट्टा, बीड़ी उद्योग, काँच उद्योग, बागानी क्षेत्रों में, चिकित्सा क्षेत्रों, खनन, चमड़ा, चाय की दुकान, ढाबा, घरेलू नौकर, रेल व बस स्टेशन, फुटपाथ जैसे अन्य संगठित और असंगठित स्थानों में काम करते हैं। शराब, ड्रग्स, तस्करी, अपराध, आतंकवाद, नक्सलवाद जैसे संगठित अपराध के क्षेत्रों में। भीख मांगना, चोरी, छिनैती, जासूसी इत्यादि जैसे असंगठित अपराध में।

प्रभाव: स्वास्थ्य शारीरिक – अपंगता, कुपोषण, टी.बी. व अन्य बीमारियाँ

मानसिक – व्यक्तित्व के विकास का अभाव

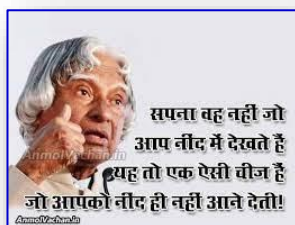
आर्थिक- अकुशल मानव पूंजी में बढ़ोत्तरी, राष्ट्रीय विकास पर दूरगामी प्रभाव नकारात्मक होगा, दुर्घटनाओं में बढ़ोत्तरी आदि।

समाजिक व सांस्कृतिक- परिवार का प्रारम्भिक ढाँचा बिगड़ेगा, सामाजिक अपराधों में बढ़ोत्तरी होगी, निरक्षर व अयोग्य माता-पिता की पीढ़ी तैयार होगी, बालिकायें यौन उत्पीड़न का शिकार, वैश्यावृत्ति, बाल-विवाह, शारीरिक प्रताड़ना इत्यादि में बढ़ोत्तरी होगी।

उपाय: बाल श्रम रोकने का उपाय यह है कि बाल श्रम को रोकने में सबसे पहले माता-पिता को आगे आना चाहिए। यदि माता-पिता अपने बच्चे को काम के बजाय पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करेंगे तो इसे आसानी से रोका जा सकता है। लेकिन कई बार माता-पिता गरीबी को इसका कारण बताते हैं। इसका समाधान यही है कि वो सरकार की योजनाओं की मदद ले सकते हैं और अपने बच्चे को बेहतर शिक्षा दे सकते हैं। यह भी देखा जाता है कि बाल मजदूरी बड़े पैमाने पर ग्रामीण स्तर में की जाती है क्योंकि वहाँ अक्सर पुलिस और छापाओं आदि का भय नहीं रहता है। ऐसे में ग्राम पंचायतों को चाहिए कि वो आगे बढ़कर आएँ और अपने गांव में हो रही बाल मजदूरी को रोकने में पुलिस और कानून की मदद करें।

बाल मजदूरी रोकने के लिए हमारी सरकार और समाज को ऐसा माहौल बनाना चाहिए कि बच्चे बाल मजदूरी की तरफ रुख ही ना करें। बल्कि वो बचपन से ही स्कूल की तरफ जाने के विचार को अपने अंदर लाएं।

निष्कर्ष: बाल श्रम वर्तमान व्यवस्था की समृद्धि व विकास के बढ़ते मानकों पर एक काला धब्बा है। यदि ईमानदारी व दृढ़तापूर्वक समाज तथा सरकारें मिलकर इससे निपटने का उपाय करें तो बालकों को असमय श्रमिक बनने से रोका जा सकता है और पंडित नेहरू का यह सपना कि – 'मैं हिन्दुस्तान के प्रत्येक बच्चे में तकदीर देखता हूँ, साकार हो सकेगा' ।



संजोय घोष
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



पिचावरम भ्रमण

बहुत दिनों से सोच रहा था, कि घर से बाहर निकलना है। घर में बैठे- बैठे घुटन महसूस होने लगी थी, लेकिन जाएँ भी तो कहाँ ? सहसा मन में पिचावरम का नाम स्मरण हो आया। तमिलनाडु के कडलूर जिले में चिदम्बरम के पास यह गाँव है। यह उत्तर में बेल्लार मुहाना एवं दक्षिण में कोलेरून मुहाना के मध्य स्थित है। वेल्लार- कोलरून मुहाना परिसर किल्लई बैंकवाटर एवं मैंग्रोव का निर्माण करता है। यह चेन्नै से 250 किलोमीटर एवं चिदम्बरम से 15 किमी. की दूरी पर स्थित है।

01 जुलाई को प्रातःकाल मैं अपनी धर्मपत्नी, दोनो बेटे एवं माता जी के साथ पिचावरम के लिए निकल पड़ा। चूँकि मैंने अपने परिवार के साथ बहुत से स्थानों का भ्रमण किया है, इस बार की यात्रा अन्य यात्राओं से ज्यादा खास रही, क्योंकि इस बार जिस गाड़ी से हमने यात्रा की शुरुआत की, उस गाड़ी की कमान मेरे बड़े बेटे के हाथों में थी। सबसे पहले हम ECR रोड से पुदुचेरी के लिए निकले। हमारी मंजिल का पहला पड़ाव पंचवटी हनुमान मंदिर था, जो बहुत सुंदर मंदिर है। यहाँ के मुख्य देवता पंचमुखी हनुमान जी हैं। दर्शन के बाद वहाँ से प्रस्थान करते हुए पिचावरम की तरफ आगे बढ़े। इसके बाद पुदुचेरी पहुँचने के बाद हमें 70-80 किमी. और आगे जाना था, अतः हमने रास्ते में ही नाश्ता कर लिया। जब हम कडलूर पहुँचे, तब तक रास्ता सही था। परेशानी इसके बाद शुरू हुई क्योंकि रास्ते के विस्तार का काम चल रहा था, साथ-साथ ओवर ब्रिज भी बन रहा था, जिसकी वजह से हमें पिचावरम पहुँचने में थोड़ी देर हुई। हम दोपहर के 01.00 बजे के करीब पिचावरम पहुँचे। यह सच में बहुत सुंदर स्थान है।

पिचावरम में मैंग्रोव वन से आच्छादित पानी के विशाल विस्तार में कई द्वीप शामिल हैं। पिचावरम मैंग्रोव वन भारत के सबसे बड़े मैंग्रोव वनों में से एक है जो लगभग 45 वर्ग किमी क्षेत्र को कवर करता है। हम नाव के द्वारा पानी के रास्ते जंगल के अंदर गए। जंगल में पहुँचने के बाद हमें यहाँ बहुत सारे पक्षियों एवं मछलियों की प्रजातियाँ दिखाई दीं। चारों तरफ ऐसा मनमोहक नजारा था, जिसे देखकर हम मोहित ही हो गए। पिचावरम में खाने-पीने की अच्छी व्यवस्था है। यहाँ तमिलनाडु सरकार का एक छोटा-सा होटल भी मौजूद है। इसके बाद हमने दोपहर का खाना खाया एवं पिचावरम से 15 किमी. दूरी पर स्थित चिदम्बरम का नटराज मंदिर देखने के लिए निकल पड़े। इसके बाद हम सब घर की ओर रवाना हुए। हमें यात्रा में बहुत मजा आया।

पिचावरम भ्रमण की कुछ तस्वीरें



बी. भुवनेश्वरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



जो हुआ, अच्छा हुआ

गीता-सार का पहला वाक्य है- 'जो हुआ, अच्छा हुआ।' इस विषय पर गंभीरता से विचार करके इसे प्रयोग में लाने से आदमी को परम संतोष की प्राप्ति हो सकती है।

जो हुआ, यदि वह हमारे जीवन के अनुकूल हुआ है, तब तो अच्छा ही है, लेकिन यदि वह हमारे मन के प्रतिकूल हुआ, तब भी अच्छा ही है। यह कैसे ? यह ऐसे कि हमें हर वक्त याद रखना चाहिए होगा कि जो बीत चुका है, उस पर किसी का वश नहीं है, क्योंकि उसे कोई वापस नहीं ला सकता है। इसलिए उसे याद कर-करके अपने मन को कष्ट देना समझदारी नहीं है। जिंदगी का साथ निभाने के लिए पुरानी बातों को भूलकर आगे बढ़ना बहुत जरूरी है।

हर 'हुए' को अच्छा मान लेने का लाभ यह है कि बीमार होने की शंका से भी पहले बीमारी का इलाज हो जाता है। यदि आदमी ऐसा नहीं करता है-अर्थात् अपने साथ 'खराब हुए' को 'भाग्यहीनता' कह-कहकर विलाप करता रहता है, तो वह अपना वर्तमान भी खराब करता है एवं अपना भविष्य अच्छा होने की दृष्टि से भी अपना समय और श्रम नष्ट करता रहता है।

सच्चे संतों की यह मान्यता है कि सुख एवं दुःख को समभाव से देखो। इसका तात्पर्य यह है कि अपने मन पर इतना नियंत्रण रखो कि वह न तो सुख में पागल हो और न ही दुःख में। जिन सज्जनों को यह महान सिद्धि प्राप्त हो जाती है, उनके लिए 'जो हुआ, अच्छा हुआ' का मंत्र शुद्ध वायु में साँस लेने के समान हो जाता है।

भूत का पश्चाताप या भविष्य की चिंता नहीं करनी है क्योंकि वर्तमान चल रहा है।

सव्यसाची भगत वरिष्ठ
लेखापरीक्षक



नशा और नशे की लत से छुटकारा

मादक पदार्थों का सेवन करने से व्यक्ति को नशा हो जाता है। कई तरह के मादक पदार्थ आज उपलब्ध हैं। इनमें कुछ प्राकृतिक हैं और कुछ मानव द्वारा संश्लेषित हैं। नशा चाहे प्राकृतिक पदार्थों के सेवन से हो या संश्लेषित पदार्थों के सेवन से, व्यक्ति का नियंत्रण स्वयं पर नहीं रहा जाता है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति कई बार अवांछित कार्य कर जाता है और जिसका परिणाम उसे जीवन-पर्यन्त भुगतना पड़ता है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि जिस समाज का युवा वर्ग नशे की चपेट में आ जाता है, वह समाज बर्बाद हो जाता है या बर्बादी की कगार पर पहुँच जाता है। नशा जब अति से गुजरता है तो इसके अत्यंत भयानक परिणाम देखने को मिलते हैं।

यह बेहद जटिल मुद्दा है, जो देश के सार्वजनिक स्वास्थ्य को क्षति पहुँचाता है। युवावस्था में यदि युवक अपने कैरियर, शिक्षा, परिवार और स्वास्थ्य पर ध्यान देते हैं तो, ऐसी बुरी आदतों के लिए समय नहीं रहेगी। नशे से मुक्ति के लिए 'नशा मुक्ति केंद्र' बनाए गए हैं। सरकार द्वारा नशा मुक्ति अभियान भी समय-समय पर चलाया जाता है। यदि युवावस्था में वे मानसिक तनाव से पीड़ित हैं तो कई ऐसे परामर्श केन्द्र हैं, जहाँ उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जाता है। नशे से मुक्ति के लिए मनोचिकित्सक का भी सहारा लिया जाता है। इसमें जागरूकता पैदा करना, उपचार और पुनर्वास और निरन्तर अनुवर्ती देखभाल शामिल है। नाटकों, चलचित्रों, विज्ञापनों एवं सोशल मीडिया के जरिए जागरूकता पैदा की जा सकती है। इसमें परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस लत से छुटकारा पाने में श्वास व्यायाम एवं योग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी परिवार का कोई सदस्य नशे का आदी हो गया है, तो उस व्यक्ति को 'ॐ' या 'ऐँ' बीज मंत्र का उच्चारण करवाना चाहिए या कम आवृत्ति पर सुनवाना चाहिए। धीरे-धीरे व्यक्ति का मन और हृदय मजबूत होने लगता है और नशे की प्रवृत्ति स्वतः समाप्त हो जाती है।



पहुँच

पहुँच बहुत बड़ी होती है भैया,
अपने खेवैयों की पार लगाती नैर्या ॥

चाहे कोई संकट हो या
मुसीबतों में हो पाँव लटक,
बीच आये समूचे तारों को झट काट
तुरंत लग जाता इनका टिकट ।

क्योंकि, पहुँच बहुत बड़ी होती है भैया
अपने भक्तों के लिए बिछाती पुष्प-शैर्या ॥

चाहे नम्बर कम हो, या ग्रेड नहीं टिक रहे,
यहाँ काबीलियत, कौड़ियों के दाम बिक रहे,
रतजगी आँखों से समूचे दिन की लड़ाई,
बस कागज़ कीमती रहे, बिक गई पढ़ाई ।

क्योंकि, पहुँच बहुत बड़ी होती है भैया
अपने चहेतों को खिलाती दूध-सेवैर्या ॥

लाखों की भीड़ में गुम होती पहचान,
रोटी के पीछे भागता हर इंसान,
भागते-भागते जूते घिसे, फट गई सिलाई,
कोई बैठे-बिठाए ही खाए घी-मलाई ।

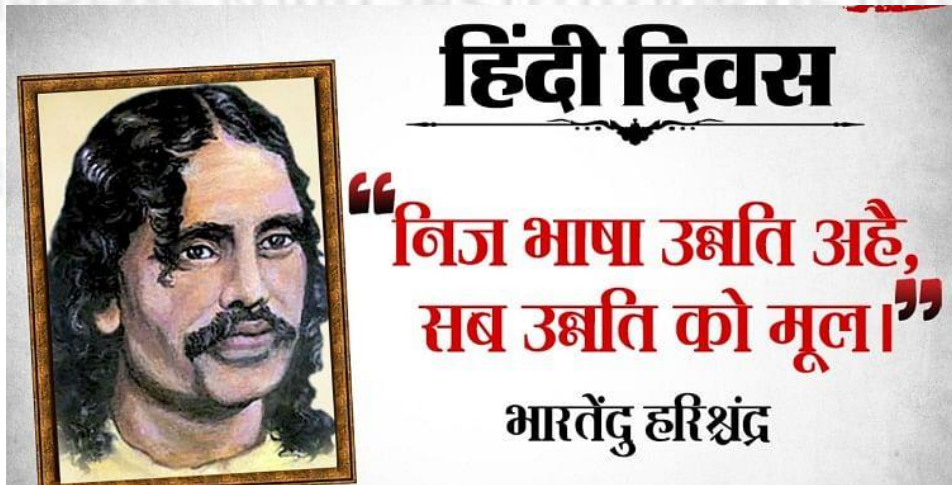
क्योंकि, पहुँच बहुत बड़ी होती है भैया
दुनिया बिक गई, बस फेंको रूपैर्या ॥

हर कीमत के दाम दे रहे,
जाने कितनों के अरमान ले रहे,
कोई मेहनत की चक्की में सन गए,
कोई सौ से नम्बर वन बन गए,

क्योंकि, पहुँच बहुत बड़ी होती है भैया
नये दौर का यह नया रवैया ॥

यही आज का बदलता युग है,
और यही कड़वी सच्चाई है ।
गुणी-सरीखे पीछे रह गए,
बस चाटुकारों से हुई भरपाई है ।

जोर लगाओ, बंद करो इसके दरवाजे
जिनका हक है, बस वही रहे आगे ।
नहीं तो, हर क्षेत्र में ऐसी तबाही आएगी
ये पहुँच ही, हम सब पर भारी पड़ जाएगी ।





जिंदगी है बस सीखने से

पुराना सिक्का अब आम है,
नए का ही अब काम है,
बदलना जो यहाँ सीख गया,
उस परिदे का ही नाम है ।

कोई कहता है, तो कहने दो ना,
कोई सुनता है, तो सुनने दो ना,
सहना, कहना क्या सही है?
कोई नहीं समझता तो रहने दो ना ।

पेड़ वही पर पत्ते नहीं,
सोच वही पर लोग नहीं,
उछला सिक्का जब वक्त का,
तो बस जान रह गयी, जोश नहीं ।

चलना जानो, तो दौड़ लेना,
कहना जानो, तो सुन लेना,
सीखना जानो, तो गलतियाँ कर लेना,
और निखरना जानो, तो परख लेना ।

कहना मुश्किल, सहना भी मुश्किल,
समझ ना आए तो, जीना मुश्किल,
जी कर फिर खुश रहना मुश्किल,
मुश्किल-मुश्किल हर राह मुश्किल ।

सब नहीं जानोगे, बस देखने से,
सब नहीं पाओगे, बस जीतने से,
सीख लो जितना सीख सको,
क्योंकि जिंदगी है बस सीखने से,
यह जिंदगी है बस सीखने से ।

जे. पुष्कला
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



नारी शक्ति

स्त्रियाँ हमारे देश की आँखें हैं। नारी अपनी शक्ति से, सभी विभागों पर अपने पदछाप छोड़ रही हैं। वे अपने गृह, कार्यालय एवं कई विभागों में बहु-कार्य कर, सफलता पाती आ रही हैं। परन्तु अपने स्वास्थ्य की तरफ ध्यान न देते हुए, थोड़ा लापरवाह रहती हैं। यह बिलकुल गलत है। महिलाओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए कुछ महत्वपूर्ण टिप्स :

1. रोज सुबह उठते ही, शीघ्रता से बच्चों को स्कूल भेजना पड़ रहा है। कॉफी/चाय दिमाग को स्पष्ट रखने में भी मदद करती है, जिससे हमारा दिमाग काम पर ध्यान केंद्रित कर पाता है। यह सोचकर कि, काफी/चाय पीने में पाँच मिनट समय चला जाएगा, उसे नज़र अंदाज़ कर देती हैं। इस प्रकार खाली पेट रहना ठीक नहीं है। पहले, किसी भी काम को शुरू करने से पहले उनको काफी/चाय/दूध या कोई भी स्वस्थ पेय पीने की आदत बनानी चाहिए।

2. 75% महिलाएँ नाश्ता नहीं करती हैं। सुबह के समय शरीर को पर्याप्त पोषण न मिलने से आप कमजोरी की समस्या का शिकार हो सकती हैं। सुबह नाश्ता ना करने से शरीर में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है और इसकी वजह से कई गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं। सुबह का नाश्ता स्किप करने से आपको ये समस्याएँ हो सकती हैं-

- डायबिटीज का खतरा
- शरीर में पोषक तत्वों की कमी
- वजन अनियंत्रित होता है
- इम्यूनिटी कमजोर होती है
- कार्टिसोल हॉर्मोन बढ़ता है
- मेटाबॉलिज्म स्लो होता है

3. स्वस्थ रहने के लिए दिनचर्या में योगासन को शामिल करने को विशेषज्ञ सबसे कारगर तरीकों में से एक मानते हैं। योगासन शारीरिक सक्रियता को बढ़ाने के साथ मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य से संबंधित कई तरह की बीमारियों के खतरे को काफी हद तक कम करने में विशेष लाभप्रद माने जाते हैं। पर भागदौड़ की दुनिया में समय के अभाव के कारण अक्सर कुछ लोगों के लिए योगासनों के लिए भी वक्त निकाल पाना कठिन हो जाता है।

ऐसी स्थिति में विशेषज्ञ उन अभ्यास को करने की सलाह देते हैं जिन्हें आप कहीं भी आसानी से करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। गहरी सांस वाले अभ्यास ऐसे ही आपके लिए बेहद फायदेमंद योगासन हैं। धीमी गति से गहरी सांस लेने की आदत आपके तंत्रिका तंत्र को आराम देने के साथ शरीर को शांत रखने में मदद कर सकती है। शारीरिक और मानसिक, दोनों तरह की सेहत पर इसके गजब के लाभ देखे गए हैं। एक या अधिक दोस्तों के साथ तेज सैर पर जाना सामाजिक मेलजोल का एक रूप है, जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। यह समाजीकरण अलगाव और अकेलेपन को दूर करने में मदद करता है, जो हृदय रोग, मधुमेह, गठिया, अवसाद, दीर्घकालिक तनाव और समय से पहले मौत से जुड़ा हुआ है।

4. रोज सुबह 11 बजे/ शाम 3 बजे, 4 बादाम/2 खजूर, एक कटोरी चना/ फल वगैरह खाने का आदत रखना चाहिए। शरीर को स्वस्थ और फिट बनाए रखने के लिए पौष्टिक आहार का सेवन करना सबसे आवश्यक माना जाता है। पौष्टिक आहार का मतलब, ऐसी चीजों का सेवन जिससे शरीर के लिए आवश्यक मैक्रोन्यूट्रिएंट्स की आसानी से पूर्ति की जा सके। जब हम स्वस्थ शरीर की बात करते हैं, तो इसके लिए कुछ पोषक तत्वों की सबसे अधिक आवश्यकता होती है- आयरन उनमें से एक है।

5. प्रति रोज, कुछ समय अपनी सहेलियों के साथ और अपने परिवार के साथ दिल खोलकर हंसी मजाक करें।

6. अगर महिलाएँ किताबें पढ़ने की आदत डालें तो उनके बच्चों को भी इसका फायदा मिलेगा।

7. मध्याह्न भोजन एवं रात्री भोजन को समय पर लेना चाहिए। कम से कम रात्री भोजन, पूरे परिवार के साथ बैठकर खाने की आदत डालनी चाहिए।

8. हर महिला को सिलाई, कढ़ाई, कला, संगीत, नृत्य, शिल्प और बहुत कुछ का शौक होता है। यदि प्रतिदिन कम से कम एक घंटा अपने शौक पर समय व्यतीत किया जाए तो मानसिक अवसाद से बचा जा सकता है।

9. यदि वह अपने तन और मन की अच्छी देखभाल करती है, तो परिवार में उसकी सक्रिय भागीदारी परिवार के लिए लाभदायक साबित हो सकती है।

10. यदि एक महिला शारीरिक एवं मानसिक रूप से तनाव रहित रहती है तो, उनकी जिन्दगी में भी हरियाली रहेगी। इससे बुढ़ापे में भी वह परिवार पर बोझ बने बिना सक्रिय जीवन जी सकती है।

ज्ञानश्री दिब्येन्दु बेहेरा
लेखापरीक्षक



कोल्लिल हिल्स का सफर

“कोल्लिल हिल्स” तमिलनाडु के नामक्कल जिले में स्थित है। किंवदंती कहती है कि कोल्लिल पहाड़ियों के ऊपर, “कोल्लिल पावई” नाम का एक भूत मौजूद था, इसलिए इन पहाड़ियों को “कोल्लिल मलै” भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है “मौत का पहाड़”। यह स्थान काफी लोगों के लिए अज्ञात है, तभी इसका प्राकृतिक सौंदर्य बरकरार है।

‘ ज़िंदगी भर नहीं मिलती किसी को खुशियाँ ,
इस लिए घूमते रहो ये हसीन वादियाँ ।

क्योंकि हर खुबसूरत सफर में हम जी लेंगे छोटी छोटी ज़िंदगियाँ । ‘

ऐसे ही खुशियाँ ढूँढते हुए एक रात को मैं अकेले ही कोल्लिल हिल्स की ओर निकल पड़ा। यह 20 मई 2023 की रात के 2 बजे के आसपास का समय था, मैंने चेन्नै के अशोक नगर इलाके में अपने सरकारी क्वार्टर से एक बाइक लेकर अपनी यात्रा आरंभ की। अपना लक्ष्य 350 किलोमीटर दूर था पर मैं कुछ पल के लिए चेन्नै की भीड़ और गर्मी से बच निकलना चाहता था। मैंने गूगल मैप को ऑन रखा क्योंकि मुझे रास्ते के बारे में बहुत कम जानकारी थी। मैंने चेन्नै-तिरुच्चि हाइवे पर यात्रा की और हमेशा विल्लुपुरम से अपनी दूरी पर नज़र बनाए रखी, क्योंकि मुझे विल्लुपुरम के बाद वेप्पुर से दाँई ओर मुड़ना था। बीच में, मैं पानी पीने के लिए रुकता था और कुछ स्ट्रेचिंग भी करता था क्योंकि मुझे नींद आ रही थी। मेरा लक्ष्य सूर्योदय के आसपास कोल्लिल हिल्स पहुँचना था ताकि मैं पहाड़ी की चोटी से दृश्य का आनंद ले सकूँ। रास्ते में कई चार पहिया वाहन और कुछ बाइक सवार भी थे, जो शायद मेरी तरह यात्रा के शौकीन थे। मैं बाइक चलाता रहा और सुबह 5 बजे के आसपास उजाला होने लगा। मुझे चारों ओर सुंदर सड़कें और हरियाली दिखाई दे रही थी जो मैं रात में नहीं देख पाया था। मैं जंगल में जितना गहरा गया, दृश्य उतना ही सुंदर होता गया। कुछ देर बाद नेटवर्क कवरेज चला गया, इसलिए लगभग सभी चौराहे पर मैं स्थानीय लोगों से दिशा के लिए पूछता था। मुझे लगता है कि मैंने शायद गलत रास्ता ले लिया था जिससे मुझे कच्ची सड़कों से गुजरना पड़ा। लेकिन मेरी किरमत्त बहुत अच्छी थी !!

उस कच्ची सड़क के दाँई ओर एक नहर थी और बाँई ओर एक सुंदर पहाड़ था जिसके ठीक ऊपर सूरज निकला हुआ था। मैं इन नजारों से बहुत खुश था लेकिन कई और खूबसूरत नजारे अभी आना बाकी थे। मैंने पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया। सड़क साँप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी थी। हर मोड़ पर अब मुझे एक चलता हुआ मोर दिखाई दिया। कुछ देर तक मुझे यकीन नहीं हुआ की ये सच है या मैं सपना देख रहा हूँ। जब मेरी बाइक उनके करीब आती तो वे या तो दौड़ते या उड़ जाते। मुझे स्वर्ग में होने जैसा महसूस हो रहा था।

जल्द ही मैं "आगाय गंगै" झरने के पार्किंग स्थल पर पहुँच गया। मैंने खूबसूरती से कटे हुए अनन्नास एवं कुछ बिस्कुट खाए और झरने की ओर चल दिया। झरने तक पहुंचने के लिए मुझे लगभग 1200 सीढ़ियाँ नीचे उतरनी पड़ी। पक्षी चहक रहे थे, बंदर भाग रहे थे और अपने बच्चों के साथ इधर-उधर कूद रहे थे। मैं थक गया था, मेरे पैर दर्द कर रहे थे लेकिन एक बार जब मैंने झरने का विशाल दृश्य देखा तो मैं सब कुछ भूल गया। मई के महीने में भी 300 फीट की ऊँचाई से पानी बड़ी ताकत से गिर रहा था और वातावरण को ठंडा बना रहा था। मैंने अपना सामान एक चट्टान पर रखा और पानी के एक पुल के बीच से चलना शुरू कर दिया, जिसमें सहारे के लिए एक रस्सी थी क्योंकि पानी की ऊँचाई कुछ स्थानों पर 6 फीट से अधिक थी। मैं एक चट्टान पर बैठ गया जहाँ ठंडा पानी गिर रहा था, मैं एक लोहे का बैरिकेड पकड़ते हुए बैठा रहा और कुछ ही मिनटों में मेरा सारा दर्द दूर हो गया। मेरा शरीर बच्चों जैसी ऊर्जा से भर गया था और मैंने पार्किंग स्थल के लिए वापस सीढ़ी चढ़ना शुरू कर दिया।

चेन्नै आते समय मैं मुख्य सड़क से आया जिसमें लगभग 70 हेयर-पिन मोड़ थे। मैं कुछ view-points पर रुका जो बहुत सुंदर थे। जंगल के बीच में मैंने एक छोटे से होटल में डोसा और सांबर खाया जो बहुत स्वादिष्ट था। मुझे वहाँ दो कुत्ते मिले। मैंने उनके लिए कुछ केक हवा में उछाला और उन्होंने हवा में कूदते हुए सभी को निगल लिया, जो काफी मजेदार था। फिर मैं चेन्नै के लिए वापस चलना शुरू किया। पहाड़ों से दूर होते ही गर्मी बढ़ने लगी पर मैं घर आकर ही आराम करना चाहता था। मैंने शाम के वक्त रास्ते में खाना खाया और वहीं एक कुर्सी पर ही 1 घंटा सो गया। उठकर मैंने फिर गाड़ी चलाया और तकरीबन 10 बजे रात को चेन्नै अपने घर सुरक्षित पहुँच गया।

इसी तरह मैंने लगभग 20 घंटे में 720 किलोमीटर की यात्रा पूरी की। मेरे शरीर में इतना दर्द था कि मैं रात को ठीक से सो भी नहीं पाया पर इस सफर की हसीन यादें हमेशा मेरे साथ रहेंगी।

‘ जिन्दगी छोटी सी है, मैं थक कर रुक नहीं सकता।

मुझे उन पहाड़ियों पर साँस लेना है

जहाँ ए.सी. की हवा भी फीक पड़ जाए।

उस हरियाली और पक्षियों के बीच मेरा दिल है गुनगुनाता,

थोड़ी-सी खुशी और सुकून की खोज में ,

मैं बस चलते ही जाता,

चलते ही जाता।’

कोल्ली हिल्स का मनोरम दृश्य



हिन्दी कार्यशाला



SUPREME A
लोक
Dedicated



इस कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला में, श्री एस. गणेशन/निदेशक,
श्री टी के.रामकुमार/ वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
श्रीमती रेवती रमेश/ उप निदेशक(ईएसआईसी), चेन्नै, अतिथि वक्ता एवं
डॉ एस. सुधावल्ली/हिन्दी अधिकारी

डॉ. एस. सुधावल्ली
हिन्दी अधिकारी



तमिलनाडु की सांस्कृतिक विशेषता- तेरुक्कूत्तु

भारत का सबसे दक्षिणी राज्य तमिलनाडु अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यह राज्य अपनी द्रविड़ संस्कृति, विशाल मंदिरों, चट्टानों पर नक्काशी, रेशम की बुनाई और कांस्य की मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। तमिलनाडु की संस्कृति प्राचीन परंपराओं, कला, संगीत और साहित्य का मिश्रण है। तेरुक्कूत्तु मनोरंजन का एक रूप, एक अनुष्ठान और सामाजिक शिक्षा का एक माध्यम है। महाकाव्यों की कहानी कहने में कलाकार नृत्य और संगीत के साथ गाने बजाते हैं। पुराने समय में, कलाकारों को उनके कौशल के लिए सम्मान दिया जाता था और त्योहारों के दौरान गाँवों में प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया जाता था। यह विभिन्न विषयों पर आधारित है। माना जाता है कि यह प्रारंभिक द्रविड़ प्रदर्शन शैलियों से विकसित हुआ था जो कथकली, यक्षगान, थेय्यम, भूटा और मुदियेडू जैसे अन्य पारंपरिक प्रदर्शनों के पूर्वज थे।



तेरुक्कूत्तु(तमिल: **கூத்து**), एक प्राचीन कला है, जहाँ कलाकार तमिल में प्रस्तुत महाकाव्यों की कहानी कहने के लिए नृत्य और संगीत के साथ गाने बजाते हैं; यह प्रारंभिक तमिल देश से उत्पन्न एक लोक कला है। अधिक सटीक रूप से कूत्तु या तो तेरुक्कूत्तु (तमिल: **தெருக்கூத்து**) या कडैक्कूत्तु को संदर्भित करता है।

आधुनिक समय में तेरुक्कूत्तु और कट्टैक्कूत्थु शब्द अक्सर एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किए जाते हैं; हालाँकि, ऐतिहासिक रूप से, ये दोनों शब्द, कम से कम कुछ गाँवों में, दो अलग-अलग प्रकार के प्रदर्शनों के बीच अंतर करते प्रतीत होते हैं: जबकि तेरुक्कूत्तु एक जुलूस में मोबाइल प्रदर्शन को संदर्भित करता है, कट्टैक्कूत्तु एक निश्चित प्रदर्शन स्थान पर रात भर, कथात्मक प्रदर्शन को दर्शाता है। मनोरंजन के एक रूप में कूत्तु सैंकड़ों साल पहले तमिलनाडु में अपने चरम पर पहुंच गया था, जैसा कि संगम ग्रंथों में 'इयल'(साहित्य), 'इसै' (संगीत) और 'नाडगम् '(नाटक) के विकास के बारे में बताया गया है। मनोरंजन के साधन से आगे बढ़कर, कूत्तु ग्रामीण लोगों को धर्म और उनके इतिहास के बारे में शिक्षित करता है।

'कूत्तु' एक अनौपचारिक नृत्य संरचना है, जिसमें प्रदर्शन आम तौर पर प्राचीन महाकाव्यों जैसे रामायण, महाभारत और तमिल शास्त्रीय महाकाव्यों के दृश्यों को दर्शाते हैं। परंपरागत रूप से कोई बोला हुआ संवाद नहीं होता, केवल गाने होते हैं। कलाकारों को पूरी भीड़ तक पहुँचने के लिए अपनी आवाज में और उच्च स्वर में गाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, क्योंकि इसमें किसी प्रवर्धन तकनीक का उपयोग नहीं किया जाता है। कलाकारों को जटिल भारी पोशाकें पहनाई जाती हैं और उनका श्रृंगार बहुत उज्ज्वल और भारी होता है। वे सिर पर ऊँची पोशाकें, चमचमाती शोल्डर प्लेटें और चौड़ी रंगीन स्कर्ट पहनते हैं। परंपरागत रूप से, यह थिएटर शैली मुख्य रूप से पुरुषों की रही है, हालाँकि आधुनिक समय में महिलाओं को अधिक शामिल किया गया है (उदाहरण के लिए कट्टैक्कूत्तु गुरुकुलम में लड़कियों का थिएटर)।

कूत्तु के प्रकारों में 'नाडुक्कूत्तु', 'कुरवईक्कूत्तु' और 'वल्लिकूत्तु' शामिल हैं, जो तमिल देश में विभिन्न लोगों की स्थिति और संस्कृति के बारे में हैं; 'समयक्कूत्तु' धार्मिक विषयों को प्रदर्शित करता है, जबकि 'पोरकलैक्कूत्तु', 'पेयक्कूत्तु' और 'तुनंगैक्कूत्तु' देश के मार्शल आर्ट और युद्ध पर केंद्रित है। एक अन्य महत्वपूर्ण कला 'चक्यारक्कूत्तु', केरल में बहुत लोकप्रिय है। 'सिलप्पधिगारम' में इस कूत्तु का उल्लेख है।

पिछले वर्षों में, इस कला के लिए कोई औपचारिक प्रशिक्षण संस्थान, स्कूल या नटुवनार (शिक्षक) नहीं थे। अब, लुप्त होती कला को प्रोत्साहित करने के लिए, इसके लिए कुछ कार्यशालाएँ हैं जिन्हें 'कूत्तुप्पट्टुरै' कहा जाता है, और कुछ समर्पित स्कूल भी हैं

यह ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय है और आधुनिक समय में भी अपेक्षाकृत अपरिवर्तित बनी हुई है। तिल्लई नटराज मंदिर, चिदम्बरम के देवता को संगम काल से "तिल्लई कूत्तन" के नाम से जाना जाता है, जो तिल्लई के लौकिक नर्तक थे; इसका संस्कृत अनुवाद नटराज है। तेरुक्कूत्तु अभिनेता अभी भी 'सिलप्पधिगारम' कहानी का प्रदर्शन करते हैं, इस महाकाव्य में प्रत्येक सर्ग के प्रारंभ और अंत के समान ही शुरू और समाप्त होता है, और अभिनेता गद्य के साथ छंदों में भी गाते हैं और बातचीत करते हैं, गद्य, पद्य के बाद आता है। 'सिलप्पधिगारम' और 'तेरुक्कूत्तु' दोनों ही महिलाओं की अक्षत(पवित्र) और धर्म परायण मूल्य के इर्द-गिर्द केंद्रित है।

तेरुक्कूत्तु के कई प्रदर्शन द्रौपदी की भूमिका पर जोर देने के साथ, महाभारत कहानी के अधिनियमन के आसपास केंद्रित हैं। रामायण पर यह नाटक मारियम्मन उत्सवों में प्रदर्शित किए जाते हैं और कुछ नाटकों में स्थानीय देवता भी शामिल होते हैं।

यह नाटक तमिल कैलेंडर के पहले महीने चित्तिरै में शुरू होने वाले इक्कीस दिवसीय मंदिर उत्सव सहित अनुष्ठान समारोहों का हिस्सा है। यह नाटक प्रदर्शन उत्सव के मध्य में शुरू होता है, और अंतिम दिन की सुबह तक जारी रहता है।

इस के प्रदर्शन आयोजित होने से पूर्व, कलाकार अपना श्रृंगार, मुखौटे और पोशाक तैयार करने से पहले स्थानीय मंदिर में जाते हैं। मुखौटे का आकार और अलंकरण और श्रृंगार का उपयोग चित्रित किए जा रहे पात्रों के आधार पर भिन्न होता है। कलाकार घुंघरू पहनते हैं और आमतौर पर नंगे पैर प्रदर्शन करते हैं। प्रदर्शन से पहले के दिनों में, गाँव में झंडे फहराए जाते हैं, जो क्षेत्र के लोगों को आसन्न नाटक मंचन का संकेत देते हैं।

विजयेता साव गुप्ता
कनिष्ठ अनुवादक



मोबाईल एवं इंटरनेट – हमारे मित्र या शत्रु ?

तकनीक ने हमारे जीवन-शैली को पूरी तरह से बदल दिया है। आज हम एक क्षण भी इसके बिना जी नहीं सकते हैं। उसी दिशा में मोबाईल, इंटरनेट और गेजेट्स सबसे बड़ी खोज है। यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। यह मानव जीवन को गति देने में सक्षम है। इसने तरक्की के सफर में एक राह दिखाई है। आज लोग घर बैठे-बैठे दुनिया से जुड़ कर ज्ञान का आदान-प्रदान कर रहे हैं। मनुष्य इंसानों के बिना जीवित रह सकता है परन्तु इसके बिना रहना लगभग नामुमकिन है।

परन्तु यह उपयोगी चीज कब उपकार करते-करते अपकार करने लग गई इस बात को भी समझना जरूरी है। आज लोग इसके इतने आदी हो चुके हैं कि दुनिया से ही कट गये हैं। जिसका अविष्कार लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए हुआ था, आज उसके कारण ही लोगों की दुनिया एक कमरे तक सिमट गई है। इसके शिकार विशेषतः बच्चे और युवा वर्ग हुए हैं। इनमें सबसे बड़ी भूल माता-पिता की होती है जो अपने बच्चों को चुप कराने या संभालने के लिए फोन पर कार्टून लगा कर देते हैं, जो धीरे-धीरे उनकी आदत बन जाती है। बच्चे बाहर जाकर खेलने से ज्यादा फोन चलाना पसंद करते हैं। बच्चे अपने अभिभावक से या शिक्षक से या किसी भी बड़े या हमउम्र के लोगों से भी बात करने से बचते हैं और बातों को टालने या टेक्सट करने पर अधिक बल देते हैं। सोशल मीडिया में वर्चुअल दोस्त बनाना और उनसे ही बातें करना पसंद आता है। दिन-दिन भर गेम खेलना, वेब-सिरीज देखना, सोशल मीडिया पर वीडियो और फोटो अपलोड करना जीवन का लक्ष्य बन गया है।

संचार में नई तकनीकों के कारण, मोबाइल फोन, कंप्यूटर, टैबलेट और अन्य उच्च तकनीक वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, उम्र, लिंग, जातीयता, करियर और आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना हम में से कई लोगों के लिए सबसे अच्छे दोस्त बन गए हैं। दूसरी ओर, ये उपकरण किसी व्यक्ति में व्यवहार संबंधी लत पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वैज्ञानिक रूप से, ऐसे (मोबाइल) फोन की लत को "मोबाइल फोन उन्माद" कहा जाता है, जो एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक बीमारी है, और इसे चिकित्सकीय रूप से "नोमोफोबिया" अर्थात् फोन न होने का डर कहा जाता है।

‘सेल फोन उन्माद’ स्मार्टफोन के अत्यधिक उपयोग के कारण है, जाहिर तौर पर सेल फोन मॉडल मल्टी मीडिया सुविधा और सेवाओं की बढ़ती संख्या के कारण है। आज की तारीख में, सेल्यूलर सब्सक्रिप्शन की कुल संख्या लगभग 7 अरब तक पहुँच गई है, जो पृथ्वी की पूरी आबादी के लगभग करीब है। ऐसा लगता है कि 80% भारतीयों के पास सेल फोन है; इनमें से 50% स्मार्टफोन हैं। एक आश्चर्यजनक रिपोर्ट है कि 29% मोबाइल फोन उपयोगकर्ताओं ने कहा है कि उनका सेल फोन से कुछ ऐसा लगाव है कि जिसके बिना वे रहने की कल्पना भी नहीं कर सकते। आजकल, यह देखा गया है कि खाने, चलने, सुनने, गाड़ी चलाने आदि के दौरान मोबाइल का उपयोग एक नियमित अभ्यास के रूप में किया जाता है। बेशक, एक मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि गाड़ी चलाते समय मोबाइल का उपयोग, शराब पीकर गाड़ी चलाने से 6 गुना अधिक खतरनाक है। इसके अलावा, कई मनोवैज्ञानिकों ने कहा कि सेल फोन के अधिक उपयोग को सिगरेट पीने और शराब पीने की लत के समान ही "लत" माना जाना चाहिए। वास्तव में, सेल फोन का दुरुपयोग या लत अन्य लत से अधिक खतरनाक हो सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के अनुसार, “अति प्रयोग” एक निर्भरता सिंड्रोम है। यह मादक द्रव्यों के सेवन या मोबाइल फोन जैसी व्यावहारिक लत के कारण हो सकता है। इसलिए, मोबाइल फोन की लत को निर्भरता सिंड्रोम माना जाना चाहिए, और इसके लिए आवश्यक निवारक उपाय शुरू करने होंगे, क्योंकि पहले से ही ‘मोबाइल फोन उन्माद’ सार्वजनिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण रूप से आक्रमण कर चुका है। जैसा कि पहले ही, WHO ने वर्ष 1996 में मानसिक स्वास्थ्य पर विकिरण के जोखिम की समीक्षा के लिए एक परियोजना स्थापित की है, आगे की आवश्यक नीति और कार्रवाई के लिए ‘मोबाइल फोन उन्माद’ को शामिल किया जा सकता है।

मोबाइल फोन के अत्यधिक उपयोग ने हमें व्यक्तिगत बीमारी, असुरक्षा, कम आत्मविश्वास, मनोदशा में उतार-चढ़ाव, नींद में गड़बड़ी, अनिद्रा, गर्दन में दर्द और कठोरता, सूखी आँखें, कंप्यूटर दृष्टि सिंड्रोम जैसी पहचानने योग्य मनोवैज्ञानिक बीमारियों में डाल दिया है। एक अध्ययन से पता चला कि एक औसत कॉलेज छात्र प्रतिदिन 9 घंटे सेल फोन का उपयोग करता है जो कि उनकी नींद की अवधि से अधिक है। मोबाइल फोन की लत और उससे जुड़ी बीमारी पर अब तक कोई विशेष जागरूकता कार्यक्रम न तो आयोजित किया गया है और न ही शुरू किया गया है। मोबाइल की लत के प्रति अज्ञानता कई कारणों से ही इसकी उपयोगिता पर हावी हो रही है। यह बिना किसी देरी के छात्रों और सार्वजनिक स्वास्थ्य के बीच ‘मोबाइल फोन उन्माद’ के खिलाफ निवारक उपाय शुरू करने का सही समय है। हर किसी को यह स्वीकार करना होगा कि मोबाइल फोन की लत मनुष्य के जीवन के लिए हानिकारक है।

इस अंधाधुंध जीवन शैली का शिकार सभी हो रहे हैं। पहले एक व्यक्ति के गिरने पर दस हाथ उसकी मदद के लिए उठते थे पर आज किसी की दुर्घटना हो जाए तो लोग मदद करने के बजाय वीडियो बनाकर सोशल मीडिया में अपलोड करते हैं। पहले लोग मन की शांति के लिए घूमने जाते थे और दृश्यों का आनंद लेते थे एवं मन की छवि में बसा लेते थे जो जीवन पर्यन्त याद रहती थी आज लोगों के पास फोटो खींचने के तो विकल्प हैं पर बस सारे दृश्य फोटो तक ही सीमित रह जाते हैं, सामने जी-भर देखने के बजाय फोटो खींचने में लगे रहते हैं और उस बेहतरीन पल को खो देते हैं।

जीवन का हर एक क्षण बस सोशल मीडिया के स्टेटस तक सीमित है। खाना-पीना, घूमने जाना, अच्छे कपड़े पहनना सब कुछ का केन्द्र बिंदु ही यही है कि स्टेटस लगा कर दिखावा किया जाए। जीवन के हर एक पलों को जीने के बजाय दिखावा करना आज का नया फैशन है। ऐसे में मानव आज भीतर से खोखला होता जा रहा है। कई तरह की मानसिक, शारीरिक बीमारियाँ उसको जकड़े हुए है। सोशल मीडिया में तो हजारों दोस्त बन गए हैं पर असलियत में कोई सच्चा मित्र नहीं जिससे वह अपना सुख-दुःख, मनोभाव बाँट सके। झूठी एवं दिखावापूर्ण जीवन दम घोंट रही है।

ऐसे में मनुष्य को इस भ्रमजाल से निकलना बेहद जरूरी है, जितना हो सके सोशल मीडिया का प्रयोग, फोन चलाने की आदत को कम करें। बाहर निकलें, व्यायाम करें, दोस्तों एवं परिवारजनों से मिलें, अच्छा खाना खाएं एवं प्रत्येक पल को महसूस करें। यह करना शुरू-शुरू में थोड़ा मुश्किल हो सकता है परन्तु रोज प्रयास करने से आदत बन जाएगी एवं कठिनाई नहीं होगी।

किसी भी वस्तु का अविष्कार हमारी जीवन-शैली को सरल एवं सुगम बनाने के लिए होता है, अतः उसका सदुपयोग करने पर वह वस्तु सदैव हितकारी होगी। मोबाईल, इंटरनेट एवं अन्य गेजेट्स का भी प्रयोग हमें बड़ी बुद्धिमानी से करना होगा जिससे वह हमारा जीवन कठिन एवं दुर्गम के बजाए सरल एवं सुगम बनाए। यह कार्य उतना भी मुश्किल नहीं है, बस हमें दृढ़विश्वास एवं समझदारी की आवश्यकता है। फोन के अलावा भी बाहर एक खूबसूरत दुनिया है, उसका आनंद लें। अपने लिए समय निकालें और अपने पसंद का कार्यकलाप करें, ताकि तकनीक हमारा शत्रु न बनकर हमारा मित्र बन सके।



राहुल साव
कनिष्ठ अनुवादक



हृदय का संविधान

राजदेव जिसे घर और गाँव के लोग 'राज' कहकर बुलाते हैं, ग्रेजुएशन के बाद कुछ दिन नौकरी-चाकरी के पीछे भागा, पर परिणाम कुछ नहीं निकला। आजकल नौकरी मिलना भगवान मिलने से भी अधिक मुश्किल है। जल्दी ही उसका धैर्य जवाब देने लगा। राज ने ग्रेजुएशन के दौरान ही जेटकिंग का हार्डवेयर डिप्लोमा और सी.सी.एन.ए. का डिप्लोमा कर लिया था। एक दिन बाबूजी का आशीर्वाद लेकर चुपचाप दूर के शहर को निकल गया। पाँच-छः महीने एच.पी. के शोरूम में काम किया। फिर किसी तंग गली में अपनी छोटी-मोटी कम्प्यूटर हार्डवेयर रिपेयर की दुकान खोल ली। 'मन लगाकर किया गया काम और ईमानदारी से अर्जित ज्ञान' कभी निष्फल नहीं होते हैं। डिप्लोमा के दौरान अर्जित ज्ञान और एच.पी. शोरूम में काम का अनुभव बहुत काम आया। राज की दुकान चल निकली। अब बड़ी-बड़ी कंपनियों से बड़ी संख्या में लैपटॉप और कम्प्यूटर राज की दुकान में मरम्मत के लिए आने लगे। बढ़ रहे बिजनेस को सम्भालने के लिए राज को दुकान के पीछे एक गोदाम भी लेना पड़ा। एक दिन खाली हाथ शहर पहुँचनेवाला राजदेव अब एक कंपनी का मालिक था।

गाँव में पक्का घर और शहर में श्री बी.एच.के फ्लैट; पाँच-छः साल बीतते-बीतते हो गए। जल्दी ही गाँव में धूमधाम से राज का विवाह सुधा नाम की सुन्दर-सुयोग्य लड़की से हो गया। सुधा कोलकाता से कम्प्यूटर साइंस में बी.टेक की हुई थी। लेकिन कोई प्लेसमेंट नहीं मिला था। बंगाल में आजकल शांति और प्लेसमेंट किसी के खोजने से भी नहीं मिलते। नव-दम्पति अब शहर आ गए थे।

अब बिजनेस में राज की ताकत बढ़ गई थी। पत्नी का इंजीनियरिंग-ज्ञान अब फलने-फूलने लगा था। अब तक राज की कंपनी सिर्फ हार्डवेयर और नेटवर्किंग का काम कर रही थी। पत्नी के आने के बाद सॉफ्टवेयर का काम भी लेने लगे। 'मेसर्स राजसुधा कंसल्टेंट्स' के नाम से एक कंपनी रजिस्टर्ड हो गई। इंफोसिस, कॉग्निजेंट, टी.सी.एस., विप्रो आदि सेवा-प्रदाता कंपनियों से छोटे-मोटे मॉड्यूल का काम इनकी कंपनी में आउटसोर्स होने लगा था। समय के साथ राज-सुधा के घर एक फूल जैसी परी की किलकारी गूँजने लगी।

पति-पत्नी दिन भर जी-तोड़ मेहनत करते। काम अपना हो और प्रत्यक्ष प्रतिफल दे रहा हो तो उसे करने का आनंद कई गुणा बढ़ जाता है। शाम को जब मासूम-सी मुस्कुराहट गोद में आकर बैठ जाती तो सारी थकान रफू-चक्कर हो जाती। राज-सुधा दम्पति की गिनती अब शहर के सफल बिजनेस फेमिली के रूप में होने लगी। बढ़ते आर्थिक कद के अनुसार इस दम्पति का उठना-बैठना अब शहर के सम्भ्रांत समाज में होने लगा।

धीरे-धीरे राज की कंपनी 'बिग-डेटा' के क्षेत्र में जानी-मानी कंपनी के रूप में प्रसिद्धि पाने लगी। सफलता अब राज-दम्पति की चेरी बन चुकी थी। सफल होने की चुनौती राजदेव पार कर चुके थे, लेकिन अब उनके सामने सफलता कायम रखने की चुनौती थी। मनुष्य कभी भी चुनौतियों से मुक्त नहीं हो सकता। देखा जाए तो जीवन की सार्थकता चुनौतियों से ही है। इधर चुनौतियाँ खत्म, उधर जीवन की सार्थकता भी खत्म। हार्डवेयर के बिजनेस से शुरुआत हुई थी। इस अर्थ में हार्डवेयर बिजनेस राजदेव के लिए लक्ष्मी-सदृश बिजनेस था। वास्तव में हार्डवेयर वह जड़ था जिससे पोषण पाकर सॉफ्टवेयर बिजनेस हरे-भरे वृक्ष की तरह लहलहा रहा था।

एक दिन रात के समय डाइनिंग टेबल पर पति-पत्नी में बिजनेस पर विमर्श चल रहा था। पत्नी की सलाह थी कि अब हार्डवेयर के बिजनेस को छोड़ दिया जाए। राजदेव इस बात के लिए तैयार नहीं थे। हार्डवेयर इनकी प्रगति का मूल था। मूल अर्थात् जड़ से कटना राजदेव को कतई स्वीकार्य नहीं था। लेकिन पत्नी अड़ गई थी। पत्नी का अड़ना स्वाभाविक था। सॉफ्टवेयर में मेहनत का प्रतिफल हार्डवेयर से कई गुणा अधिक था। राजदेव पत्नी को समझाने लगे-"आप इंजीनियर हैं। आपका सॉफ्टवेयर-ज्ञान मुझसे अधिक है। सॉफ्टवेयर आप सम्भाल लें और हार्डवेयर मैं सम्भाल लेता हूँ।"- "फिर से हार्डवेयर?" पत्नी अब राजदेव पर चीख पड़ी।

- "चिल्लाना मुझे भी आता है। लेकिन मैं तभी चिल्लाता हूँ जब ज़रूरत होती है।" राजदेव ने समझाने की कोशिश की। पत्नी पति को जब बोलने लगे तब पति द्वारा समझाना आग में घी का काम करता है। चिन्गारी धधक चुकी थी। बात बढ़ने लगी और बहुत अधिक बढ़ गई। सुधा राजदेव के खानदान के 'महिमामंडन' तक पहुँच गई। राजदेव ने भी दनादन पलटवार किया। घर की आवाज़ जब दीवारों की सहन-शक्ति को रौंदने लगी तब राजदेव घर से बाहर निकल गया। पति-पत्नी में बोलचाल बन्द हो गई।

अब राजदेव सॉफ्टवेयर बिजनेस से आँख मूँदने लगा और पत्नी हार्डवेयर से। हार्डवेयर में मोटा काम अधिक होता है। इस कारण से बिजनेस यथावत चलता रहा। लेकिन सॉफ्टवेयर लड़खड़ाने लगा। इसके कारण थे, हार्डवेयर का काम स्वयं चलकर आता है लेकिन सॉफ्टवेयर का काम लाना पड़ता है। सॉफ्टवेयर डिजाइन, प्रोग्रामिंग और कोडिंग जैसे कामों में सुधा सिद्धहस्त थी। लेकिन बिजनेस में और भी बहुत कुछ करने की ज़रूरत होती है; मसलन एल.ओ.आई., बी.ए.एम., आर.एफ.पी., पी.ओ., पी.एल.एस., प्रेजेंटेशन आदि-आदि। अनुभव के आधार पर इन कामों में राजदेव को महारत हासिल थी।

धीरे-धीरे सॉफ्टवेयर का बिजनेस गिरने लगा। राजदेव सब देखता, लेकिन बोलता कुछ नहीं। इसी बीच सुधा ने वीमेन एम्पावरमेंट ग्रुप ज्वाइन कर लिया था। कुछ दिनों के बाद सुधा ने कोर्ट में डायवोर्स का पेपर फाइल कर दिया।

बात कुछ भी नहीं थी, लेकिन बात बहुत कुछ होकर तलाक तक पहुँच चुकी थी। रात में राजदेव को सुना-सुनाकर सुधा उसकी हजार गलतियाँ अपने मायकेवालों को फोन पर सुनाती। सुधा एक इंजीनियर थी, बिजनेसपर्सन थी, लेकिन साथ ही आम भारतीय नारी भी थी। हमेशा मायकेवालों को एकांगी कहानी सुनाती। कहानी में खूब मिर्च-मसाला होता। अनेक घटनाएँ ऐसी भी सुनाती जो कभी घटित ही नहीं हुईं। सुधा को मायके से पूरा सपोर्ट मिल रहा था।

उधर राजदेव के गाँव का भी यही हाल था। सभी जानते थे कि राजदेव अपने दम पर फर्श से अर्श तक पहुँचनेवाला होनहार पुत्र है। उसके खानदान की बेइज्जती? बर्दाश्त से बाहर की बात है। ईंट से ईंट बजा देने की बात दोनों तरफ से होने लगी। तलाक का मुकदमा तेजी से आगे बढ़ने लगा। डेढ़ वर्ष के बाद जज का फैसला आया। अब पति-पत्नी आजाद थे। जजमेंट की अपनी-अपनी कॉपी लिए दोनों पक्ष चाय-पानी के लिए गए। संयोग ऐसा हुआ कि दोनों पक्ष एक ही दुकान में गए। सुधा को देखकर राजदेव धीरे से सरककर उसके टेबल पर आ गया। विचित्र दृश्य था – एक ही टेबल पर तलाकशुदा पत्नी चुप और तलाकशुदा पति खामोश।

- "कांग्रेस्युलेशन....आप जो चाहते थे वही हुआ," सुधा नीरवता तोड़ती बोली।

- "आपको भी बधाई.....आप आज जीत गईं, मैं हार गया...."- राजदेव के स्वर में नैसर्गिक पीड़ा थी।

- "तलाक से जीत-हार होती है क्या?" सुधा ने पूछा।

- "आप बताएँ?"

सुधा ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर के बाद सुधा बोली – "आपने मुझे चरित्रहीन कहाअच्छा हुआ अब चरित्रहीन स्त्री से पीछा छूट गया।"

- "सरासर झूठ, मैं सूरज को चाँद कह सकता हूँ, दिन को रात कह सकता हूँ, लेकिन ऐसी धिनौनी बात मेरे होठों पर आ ही नहीं सकती, झूठ मत बोलिए। आपके चरित्र के सामने मेरा चरित्र फीका है।"

- "मेरा सिर्फ तन जिन्दा है, मन से मैं मर गई हूँ।"- सुधा की आवाज़ सपाट थी, न दुःख, न गुस्सा।

- "कोर्ट में आपने मुझे दहेज का लोभी कहा?"

- "आवेश में कह दिया। मैंने ग़लत कहा था".... राजदेव को देखते हुए सुधा बोली।

चाय आ गई थी। सुधा ने चाय उठाई। उठाते समय चाय ज़रा-सी छलक गई। गर्म चाय सुधा के हाथ पर गिर गई।

- 'रसी' ... 'रसी' की आवाज़ राजदेव के मुँह से निकली। पॉकेट से रुमाल निकालकर मुँह से भाप देकर सुधा के जख्म पर रख दिया। सुधा राजदेव को देखती रही।

- "आपका कमर दर्द अब कैसा है?"

- "ठीक ही है, कभी बोवरॉन तो कभी कॉम्बीफ्लाम," सुधा बात खत्म करने की कोशिश करती बोली।

- "कैसे ठीक होगा? आपको कोई एक्सरसाइज तो करना नहीं है, हमेशा अपनी मर्जी, जो बताया जाए वह तो बिल्कुल ही नहीं करना।" राजदेव ने जब कहा तब सुधा नज़रें नीची किए पैर के नाखून से ज़मीन कुरेदती रही। उसके चेहरे पर एक फीकी हँसी भी दिख रही थी।

- "आपके सुगर का क्या कंडीशन है? ... आजकल बढ़ा हुआ तो नहीं है?"

"जाने दीजिए, अब, इन बातों से क्या फायदा? होइहहिं सोई जो राम रचि राखा।"

राजदेव के चेहरे पर पसीने की बढ़ती मात्रा से सुधा समझ गई थी कि सुगर लेवल बहुत बढ़ा हुआ होगा। राजदेव कुछ सोचने लगे, फिर बोले - "मुझे आपको चालीस लाख रुपए देने हैं और पचास हज़ार हर महीना।"

- "हाँ ... तो?" सुधा ने पूछा।

- "अटलांटिस में फ्लैट है ... आपको मालूम है। आपके नाम कर देता हूँ। चालीस लाख रुपए अभी फिलहाल मेरे पास नहीं हैं।" राजदेव ने असहाय स्वर में कहा।

- "अटलांटिसवाले फ्लैट की कीमत तो दो करोड़ से कम नहीं होगी? मुझे सिर्फ चालीस लाख ही चाहिए।" सुधा स्पष्ट करती बोली।

- "बेटी बड़ी होगी ... सौ खर्चे होंगे।" राज ने कहा।

- "उसके लिए तो पचास हज़ार महीना आप भेजेंगे ही।"

- "ज़रूर।"

- "चालीस लाख अगर अभी पास में नहीं हैं तो मत दीजिए, बाद में दे दीजिएगा।"

सुधा के स्वर में दाम्पत्य की सुरभि अभी भी महक रही थी। राज सुधा का चेहरा देखता रहा ... कितना सहृदय और कितनी सुन्दर लग रही थी वह स्त्री, जो इस जजमेंट के पहले तक उसकी पत्नी थी। किसी लड़की को पत्नी बनाने के लिए बाजे-गाजे, कर्मकांड और न जाने क्या-क्या किए जाते हैं। पर, उसी पत्नी को परायी बना देने के लिए जज का लिखा यह काला कागज? सुधा राज को निहारती जा रही थी ... "कितना सरल स्वभाव है इस पुरुष का? पहले यह मेरा पुरुष था, अब पराया हो गया! एक कागज में इतनी ताक़त? इस पुरुष ने मुझे टूटकर प्यार किया, उतना कोई करता है क्या?... मेरे बाबूजी ने इन्हें ठोक-बजाकर मेरे लिए चुना था। मेरे घर 'वर' बनकर आए थे। वर का अर्थ ही होता है 'अच्छा', सबसे अच्छा... थे भी ... वर खराब कैसे हो सकता है?... मेरी ही ग़लती है ... सोसाइटी स्विमिंग पूल में मैं पहले दिन ही डूबने लगी थी।

मेरे पति ने कुछ भी नहीं सोचा, आव देखा न ताव और सीधे कूद गए.. मेरी जान बचाने... उन्हें तैरना नहीं आता था। अपनी जान की कोई परवाह नहीं की ... लेकिन बात भी तो इन्होंने ही बढ़ाई थी ... उस समय सिर्फ मेरी बात सुन लिए होते, बाद में मानते या नहीं मानते। पत्नी तो बोलती ही है।

"उधर राज सुधा को एकटक देखे जा रहा था ... "कितना ध्यान रखती थी ... खाना, कपड़ा, दवाई ... सब जिम्मा अब कौन सम्भालेगा? इनके बिना घर काटने को दौड़ेगा। इन्हीं से तो घर था ... मैं हमेशा अपनी मर्दानगी के नशे में चूर रहा, सुधा की भावनाओं की तरफ कभी ध्यान ही नहीं दिया।" ये सारी बातें दोनों के मन के अन्दर ही चल रही थी। बाहर सिर्फ नीरसता, निर्विकारता। लेकिन चेहरे का भाव तो हृदय के अधीन होता है। दोनों जितना अधिक छिपाते, पश्चाताप के भाव चेहरे से उतने अधिक मुखर होते। दोनों बेचैन हो गए। खुलने को कोई तैयार नहीं।

मनुष्य की कौन कहे, हर जीव की स्वाभाविक गति अन्धेरे से प्रकाश की तरफ होती है। ये दोनों मनुष्य होकर भी प्रकाश से अन्धकार की तरफ जा रहे थे। सात जन्मों का रिश्ता, जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार, कोई समझौता नहीं हो सकता। जो लोग इसे समझौता मानते हैं वे अधोगति को प्राप्त हैं, वे अन्धकार से निकलना नहीं चाहते। "...नहीं, हम मुर्दा मनुष्य नहीं हैं...।" - अनहद आवाज गूँज रही थी जिसे सिर्फ ये दोनों ही सुन सकते थे, अन्य कोई नहीं। लेकिन दोनों चुप, पूर्ण खामोशी। दोनों की छोटी प्यारी-सी बेटी कभी माँ को देखती तो कभी पिता को। उसे क्या पता कि एक संतान के लिए जो नहीं होना चाहिए था, वही हो गया है। राज और सुधा बेटी को देखते, पर कलेजे पर पत्थर रखकर शांत रहते।

- "एक बात कहूँ?"

- "कहिए।"

- "डर लग रहा है।"

- "डरिए मत, हो सकता है कि जो आप कहने जा रही हैं वही मैं भी सोच रहा होऊँ! इतना कह दूँ कि आप मुझे बहुत याद आती हैं।"

- "मेरा भी तो वही हाल है।"

अब दोनों की आँखें भीगने लगी थीं। राज ने कहा - "क्या हम दोनों अपना जीवन फिर से ... नए सिरे से शुरू कर सकते हैं?"

- "वह कैसे?"

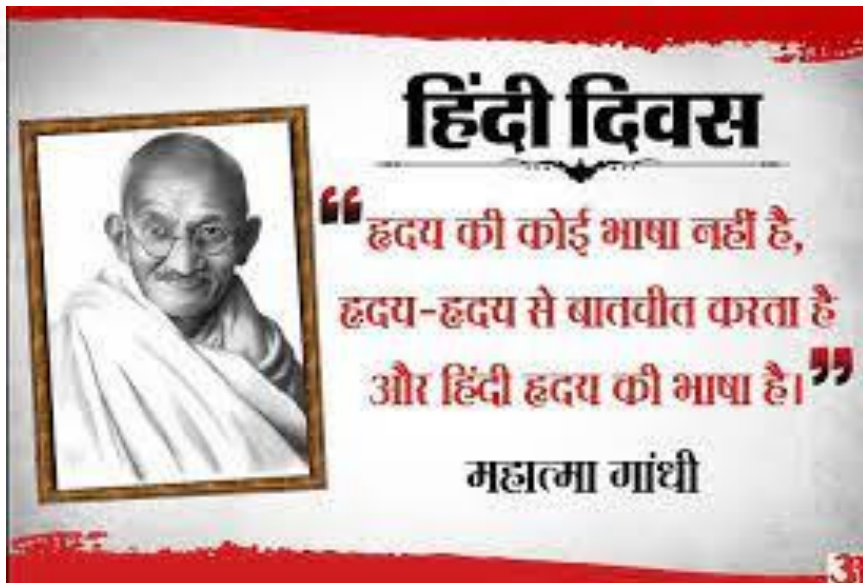
- "फिर से एक ही घर में रहकर?"

- "लेकिन यह पेपर?"

"इसे फाड़ देते हैं" इतना कहकर राज ने अपने हाथ का पेपर फाड़ दिया। देखा-देखी सुधा ने भी अपना पेपर फाड़ दिया। दोनों पक्ष के वकील और रिश्तेदार इन दो आत्माओं को नया अध्याय लिखते देख रहे थे। उनकी आँखें फटी की फटी रह गईं।

दोनों के हृदय का भावावेग अब किसी भी नियंत्रण से बाहर हो गया था। लोकलाज का कोई ख्याल नहीं रहा। अचानक दोनों एक दूसरे से लिपट गए। दोनों दहाड़ मार कर रो रहे थे। राज सुधा की आँखें पोंछ रहा था और सुधा राज की। दोनों के बीच एक फूल जैसी परी अपने दोनों हाथों को फैलाए अपने माता-पिता को समेटे खड़ी थी। यह दृश्य जिस किसी ने देखा उसकी आँखें धन्य हो गईं। न्याय-विधान द्वारा पराए घोषित दो मनुष्य अब हृदय के संविधान के तहत फिर से पति-पत्नी बन गए थे। दोनों ने एक दूसरे का हाथ पकड़ा। दोनों के पग अपने-आप घर की ओर चल रहे थे।

इस घटना को दो-तीन साल बीत गए हैं। 'मेसर्स राजसुधा कंसल्टेंट्स' फॉर्च्यून 500 कंपनी में अब शामिल हो गई है। कंपनी हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर, दोनों ही क्षेत्रों में चमक रही है। कंपनी का सालाना टर्नओवर पाँच सौ करोड़ को पार कर चुका है।



केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में सुश्री विजयेता साव गुप्ता, कनिष्ठ अनुवादक को स्वर्ण पदक एवं श्री राहुल साव, कनिष्ठ अनुवादक को उत्कृष्ट पुरस्कार की प्राप्ति



बधाई हो



दिनांक 21.03.2023 को आयोजित नकद पुरस्कार एवं मेरिट
प्रमाण पत्र वितरण समारोह की झलक



11 से 17 सितंबर 2023 तक कोरिया के जोंजू में बीडब्ल्यूएफ
वर्ल्ड सीनियर चैंपियनशिप 2023 में मिश्रित युगल में कांस्य
पदक हासिल किया।
श्री मोहम्मद रेहान, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
बधाई हो



राजभाषा गतिविधियाँ

भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी दिशा निर्देश के अनुपालन में, हमारे कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु लगातार प्रयत्न किया जा रहा है। संपूर्ण वर्ष में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन हुआ। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने सभी बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लिया एवं कार्यान्वयन पर विचार-विमर्श किया। बैठक के कार्यवृत्त राजभाषा विभाग को एवं अनुपालना रिपोर्ट मुख्यालय को भेजे जा रहे हैं। नियमित रूप से तिमाही प्रगति रिपोर्ट राजभाषा को ऑनलाइन भेजी जा रही है। धारा 3(3) का शत प्रतिशत पालन किया जा रहा है।

हमारे कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजपत्रित अधिकारी एवं अराजपत्रित कर्मचारी कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेकर लाभांविता हुए। कार्यशाला में भाग लेने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सहायक सामग्री एवं कार्यालय निपुणता का वितरण किया गया। प्रत्येक तिमाही को इस कार्यालय के किसी एक अनुभाग/स्कंध का अभिमुखीकरण किया जाता है ताकि राजभाषा संबंधी कार्यों, तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने से संबंधित जानकारी या अन्य किसी असुविधाओं का निवारण किया जा सके।

भारत सरकार के राजभाषा विभाग के आदेशानुसार हिंदी अनुभाग ने द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी में भाग लिया एवं दिनांक 19.09.2022 से 29.09.2022 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। दिनांक 29.09.2022 को हिंदी दिवस के समापन समारोह में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश पढ़ा गया, साथ ही विभागाध्यक्ष द्वारा “सुगंध” के 10वें संस्करण का विमोचन किया गया एवं हिंदी दिवस समारोह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

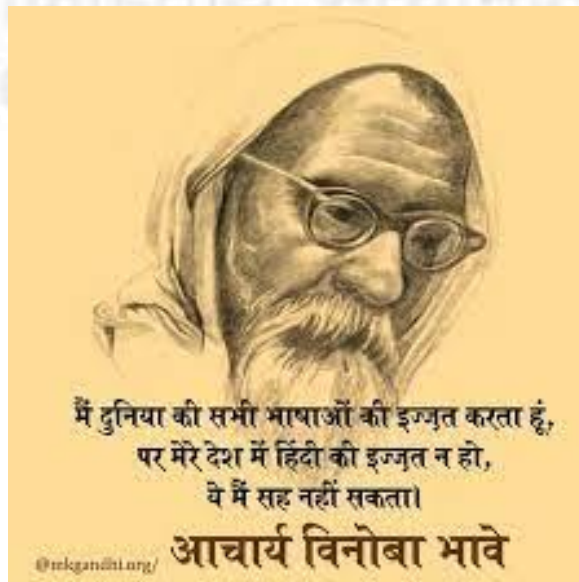
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों एवं राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित सम्मेलनों/संगोष्ठी आदि में इस कार्यालय की उपस्थिति हमेशा रही है। संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन तिरुवंतपुरम (केरल) में हिंदी अनुभाग की डॉ. एस. सुधावल्ली, हिंदी अधिकारी द्वारा दिनांक 27.01.2023 को भाग लिया गया। इसके अलावा हिन्दी अनुभाग की सुश्री विजयेता साव गुप्ता, कनिष्ठ अनुवादक को दिनांक 14.11.2022 से 24.12.2022 तक आयोजित 30 दिवसीय प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण में “स्वर्ण पदक” प्राप्त हुआ एवं श्री राहुल साव, कनिष्ठ अनुवादक को दिनांक 16.01.2023 से 27.02.2023 तक आयोजित 30 दिवसीय प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण में “उत्कृष्ट” स्थान प्राप्त हुआ।



अप्रैल 2022 से मार्च 2023 तक सेवानिवृत्त पदधारियों की सूची

क्रम सं.	नाम (सुश्री/श्री/श्रीमती)	पद
1	ए. आनंद राज	पर्यवेक्षक
2	आर. गणेश	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
3	एस. शिवनमुगम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
4	एन.मोहन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
5	डी. मेरीदोस	सहायक पर्यवेक्षक
6	एम.सुंदरराजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
7	टी.डेविड जयराज रविचंद्रन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
8	एन. रामचंद्रन-IV	सहायक पर्यवेक्षक
9	एन.के.बालासुब्रमणियम	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
10	सी. चंद्रा बाई	एम.टी.एस
11	डी. सुधाकर राजु	सहायक पर्यवेक्षक
12	निर्मला दिवाकरन	सहायक पर्यवेक्षक
13	कमल रॉय	सहायक पर्यवेक्षक
14	सी. मीना कुमारी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यं नित्यं
Dedicate Interest



अप्रैल 2022 से मार्च 2023 तक पदोन्नत पदधारियों की सूची

क्रम सं.	नाम (सुश्री/श्री/श्रीमती)	पद
1	आशुतोश यादव	लेखापरीक्षक
2	सुधीर बर्नवाल	लेखापरीक्षक
3	विक्रम कुमार	लेखापरीक्षक
4	ज्ञानश्री दिब्येंदु बेहेरा	लेखापरीक्षक
5	अभिषेक कुमार-I	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
6	टी.जी. श्रीकुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
7	एस. मरियप्पन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
8	ए. जॉक्सन दास	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
9	एस. सबिना	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
10	एम. इलवरसन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
11	आर. श्रीदेवी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
12	वी. भुवनेश्वरी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
13	राजेश कुमार राम	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
14	पी. शिबिन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
15	जी. नवम्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
16	एम.एस.अमीर मौलाना	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
17	एल. नटराजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
18	सी. पांडियन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
19	एम.एस.मनोज	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
20	ए. सेल्वाराज	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
21	बेलाल अहमद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
22	पी. भवानी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
23	एस. विश्वनाथन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
24	वेलिगटला विनयकुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
25	के. सुगुमारन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
26	प्रवीण कुमार मीना	लेखापरीक्षक
27	एम.जननी	लेखापरीक्षक

2022-23 में खेल-कूद में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पदधारी

क्रम सं	खिलाड़ी का नाम	खेल का नाम
1	श्री एस. मारीस्वरन, लेखापरीक्षक	हॉकी, फुटबॉल
2	श्री ए.एस. भास्करन, पर्यवेक्षक	हॉकी, फुटबॉल
3	श्री उपेन्द्र सिंह तँवर लेखापरीक्षक	हॉकी, फुटबॉल
4	श्री उपेंद्र सिंह तनवर	हॉकी, फुटबॉल
5	श्री सी.वी. बाबू	कैरम
6	श्रीमती रोजलिन मेरी	कैरम
7	श्री सव्य साची भगत	कैरम
8	श्री पी. अशोकन	कैरम
9	श्रीमती डी. स्वर्णलता, सहायक पर्यवेक्षक	कैरम
10	श्री एस एस. कण्णन, सहायक पर्यवेक्षक	बैडमिंटन
11	श्री आर मोहम्मद रेहान, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	बैडमिंटन
12	श्री एम. रमेश बाब	फुटबॉल



सुगंध
2023



प्रकृति: रक्षति रक्षिता

